जयशंकर प्रसाद

जीवन परिचय-

प्रसाद जी का जन्म काशी के ' सुंघनी साहू ' नाम से प्रसिद्ध वैश्य परिवार में 30 जनवरी , 1889 ई 0 को हुआ था । पिता जी का नाम देवी प्रसाद था| बचपन में ही इनके माता - पिता की मृत्य हो गयी|परिवार का सारा भार इनके बड़े भाई पर आ गया| सर्वप्रथम इनका नाम ' क्वींस कालेज में लिखाया गया , किन्तु वहाँ इनका मन नहीं लगा और घर पर ही योग्य शिक्षकों से अंग्रेजी और संस्कृत का अध्ययन करने लगे, कुछ दिन बाद इनके बड़े भाई शम्भूनाथ जी भी चल बसे|

अब सारा भार प्रसाद जी के कंधो पर था | इन्होंने तीन शादियां कीं , किन्तु तीनों ही पत्नियों की असमय मृत्यु हो गयी । इसी बीच इनके छोटे भाई की मृत्यु हो गयी । इन सभी असामयिक मौतों से यह अन्दर - ही - अन्दर टूट गये । संघर्ष और चिन्ताओं ने स्वास्थ्य को बहुत हानि पहुँचायीं । क्षय रोग से पीड़ित होने के कारण 15 नवम्बर , 1937 ई 0 को 47 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया ।

कृतियाँ -

प्रसादजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । महान् कवि , सफल नाटककार , उपन्यासकार , कुशल कहानीकार और श्रेष्ठ निबन्धकार थे ।

इनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं-

- नाटक –

चन्द्रगुप्त , स्कन्दगुप्त , अजातशत्रु , ध्रुवस्वामिनी , विशाख , राज्यश्री , कामना , जनमेजय का नागयज्ञ , करुणालय , एक चूंट , सज्जन एवं प्रायश्चित

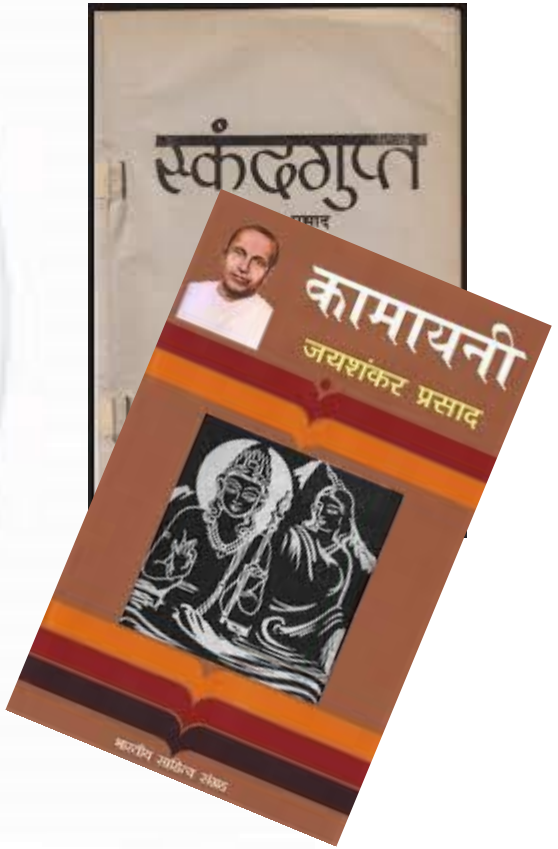

- कहानी संग्रह –

  प्रतिध्वनि , छाया , इन्द्रजाल ,

  आकाशदीप , आंधी

- काव्य –

  कामायनी (महाकाव्य) , झरना ,

  लहर , आँसू , महाराणा का महत्त्व ,

  कानन- कुसुम आदि प्रसिद्ध काव्य ग्रन्थ हैं ।

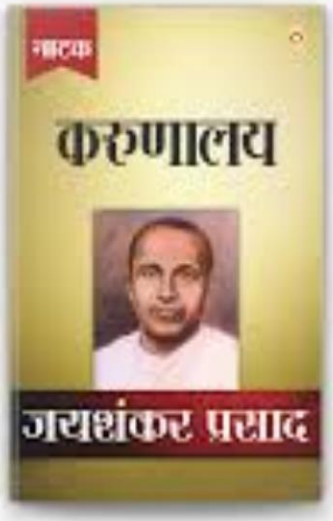

- उपन्यास –

  कंकाल , तितली ,

  इरावती (अपूर्ण)

- निबन्ध - संग्रह –

  ' काव्य कला ' और अन्य निबन्ध हैं ।

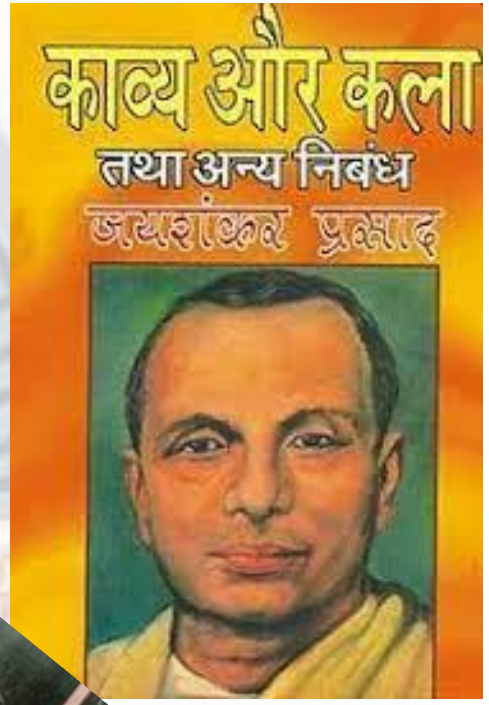

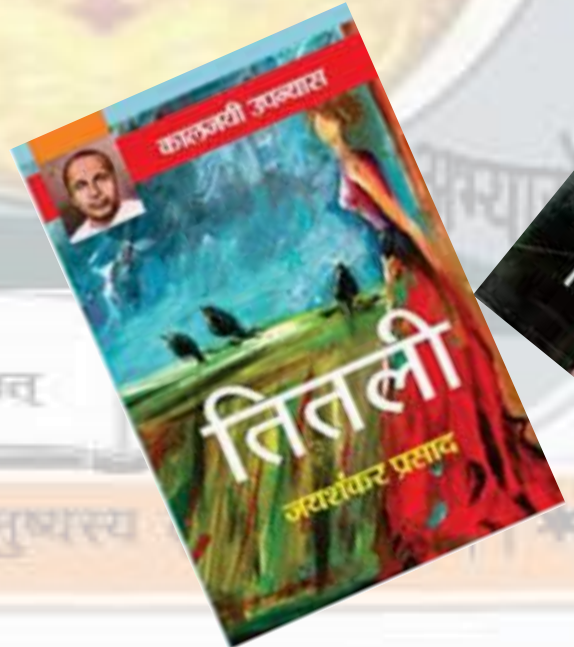

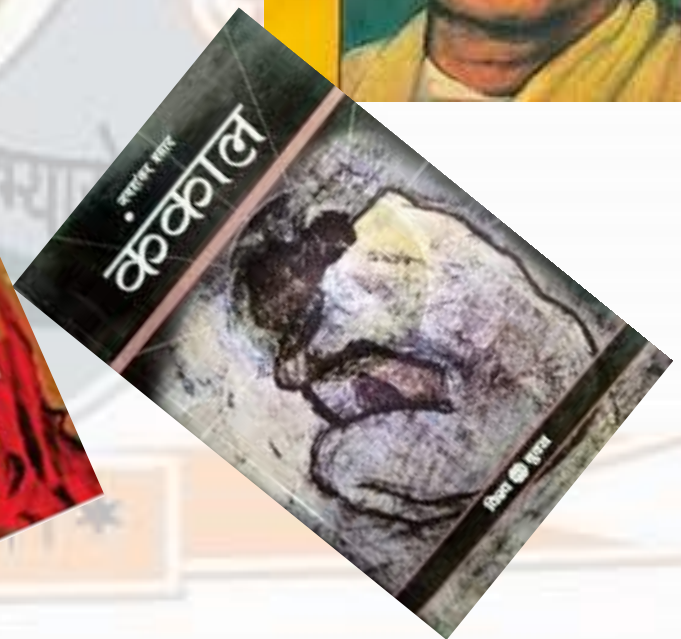

भाषा शैली –

प्रसादजी की भाषा शुद्ध , सरस , साहित्यिक एवं संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है ।

इनके काव्य में वर्णनात्मक भावात्मक आलंकारिक एवं चित्रात्मक शैली के दर्शन होते हैं|
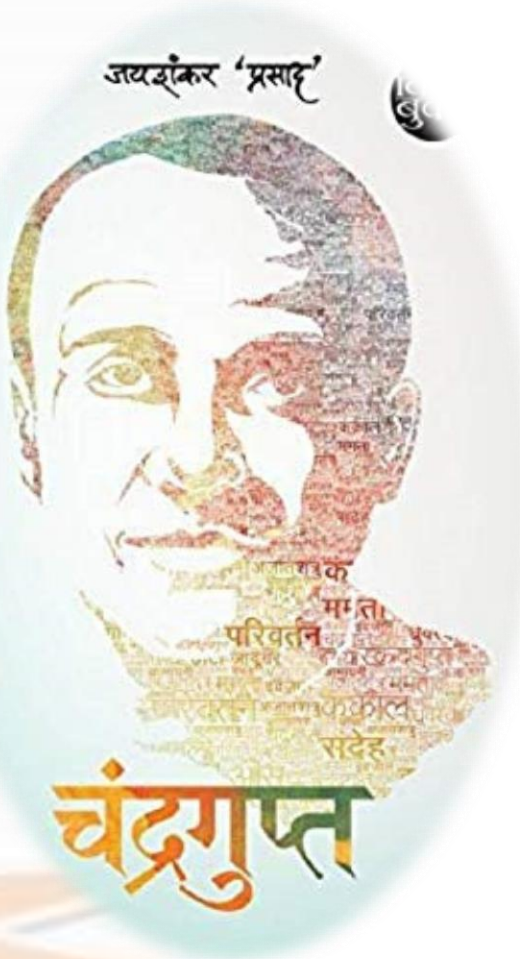
∞ ∞ ∞ ∞ ∞ ∞ ∞ ∞ ∞ ∞